

3) N. eines Strauchs, *Sida cordifolia* und *rhombifolia*, H. an. 4, 285 (बलभिदि). MED. I. 148 (श्रीषधीभिदि). Suçr. 1, 145, 16. 157, 2. 2, 96, 3. 120, 14 (°बल). 138, 21; vgl. बलिका, बल्या, भूरिबला.

अतिबाहु (अति + बाहु) m. N. pr. einer der Saptarshi im 14ten Manvantara, HARIV. 491.

अतिबीभत्स (अति + बीभत्स) m. ungeheure Missgunst R. 3, 1, 21.

अतिब्रह्मचर्य (अति + ब्रह्मचर्य) n. übertriebene Enthalttsamkeit, Keuschheit (Gegens. अतिमैथुन) Suçr. 1, 290, 12.

अतिब्रह्मन् (अति + ब्रह्मन्) m. N. pr. eines Königs LIA. II, 410.

अतिभवतो (अति + भवतो von भवत्) P. 1, 1, 72, Vārt. 2, Sch.

अतिभार (अति + भार) m. 1) ungeheure, zu grosse Last: को ऽतिभारः समर्थानाम् PAKĀT. I, 22. रजको ऽतिनिर्दयो ऽतिभारेण मां (ein Esel spricht) पीडयति 213, 1. Uebermaas (an Gewicht): अशोकैः पुष्पभारतिभारेण स्पृशद्भिरिव मेदिनीम् R. 5, 17, 14. — 2) N. pr. eines Königs BHĀG. P. im VP. 447, N. 9. — 3) R. 3, 74, 30. und 6, 37, 12. falsche Lesart für अतिभाव.

अतिभारग (अतिभार 1. + ग gehend) m. Maulthier RĀGĀN. im ÇKDR.

अतिभाव (von भू mit अति) m. Besiegung, Ueberwältigung: न कालस्यातिभावो ऽस्ति कृतातः खलु दुर्जयः R. 6, 23, 22; vgl. noch die folgenden Stellen, wo अतिभाव statt अतिभार zu lesen ist: नातिभारो ऽस्ति देवस्य सर्वभूतेषु 3, 74, 30. नातिभावो ऽस्ति देवस्य पौरुषे नियता मतिः 6, 37, 12.

अतिभी (अति + भी) m. der überaus schreckenerregende Lichtglanz des Donnerkeils, Blitz H. 181. HALĀJ. im ÇKDR.

अतिभूमि (अति + भूमि) f. Höhepunkt: माने ऽतिभूमिं गते AMAR. 80. प्राप्य — अतिभूमिम् (Sch. = परा काष्ठाम्) — मुरतस्य ÇĀ. 10, 80. Im ÇKDR., wo अतिभूमि durch आधिक्य erklärt wird, lautet der eben angezogene Vers so: प्राप्य मन्मथमदातिभूमिं दुःसहस्तनभराः मुरतस्य.

अतिभोजन (अति + भोजन) n. zu vieles Essen SHADV. Br. 6, 4. M. 2, 57. JĀGĀ. 1, 112.

अतिभू (अति + भू) adj. mit starken Brauen versehen: अतिभुवे ब्राह्मणाय P. 1, 4, 3, Vārt. 2, Sch.

अतिम erscheint als Thema in einigen Casus von अत्यक्तम् P. 7, 2, 97, Sch.; vgl. BÖHTLINGK zu 7, 2, 90.

अतिमङ्गल्य (अति + मङ्गल्य) 1) adj. sehr heilbringend ÇKDR. — 2) m. Name einer Pflanze, *Aegle Marmelos*, RATNAM. im ÇKDR.

अतिमति (von मन् mit अति) f. Uebermuth: नि षू न्मार्तिमतिं कपस्य चित् RV. 1, 129, 5.

अतिमध्यदिन (अति + मध्यदिन) n. die Zeit gerade um die Mittagsstunde: नातिकल्यं नातिमायं नातिमध्यदिने स्थिते । नाज्ञातेन समं गच्छेत् M. 4, 140.

अतिमर्याद (अति + मर्यादा) adj. übermässig H. 1506.

अतिमर्श (अति + मर्श) m. eine enge gegenseitige Berührung: ते द्वेके सकृद्वृत्तौ सकृदतोवृत्तौ विक्रान्ति तदुपातो विकारे कामो नेतु प्रगाथाः कल्पन्ते । अतिमर्शमेव विकरेत्तथा वै प्रगाथाः कल्पन्ते AIR. Da. 6, 28. — Vgl. व्यतिमर्श.

अतिमात्रं (अति + मात्र) adj. über das gewöhnliche Maass hinausgehend, übermässig: य आत्मानमतिमात्रमेवं आधाय विधत्ति AV. 8, 6, 13. Suçr. 2, 202, 11 (Gegens. हीनमात्र). अतिमात्राणि प्रमाणाधिकानि Sch. zu ÇĀ. 78. keine Grenzen kennend: स्त्रिया गृहीतो हृदये ऽतिमात्रया

R. 2, 12, 108. Im comp. vor einem adj. überaus, sehr: अतिमात्रलोहित ÇĀ. 29. °मुडःसह 78. — अतिमात्रम् adv.: अतिमात्रमवर्धत नार्दिव दिवमस्पृशन् AV. 5, 19, 1. अतिमात्रमयं देशो मनोज्ञः प्रतिभाति मे R. 2, 93, 18. अतिमात्रं त्रस्तो ऽक्तम् 4, 32, 8. अतिमात्रं प्रकुर्यो ऽयं किं जनस्य 2, 7, 8. तस्य प्रसङ्गा ऽभूदतिमात्रं स्म देवने N. 13, 32.

अतिमात्रशम् (von अतिमात्र) adv. überaus, sehr Suçr. 2, 354, 17.

अतिमान (von मन् mit अति) m. Uebermuth, Hochmuth: पराभवस्य कैतन्मुखं यदतिमानः ÇĀ. Br. 5, 1, 1. KĀN. 50.

अतिमानिता (von अतिमानिन्) f. eine sehr hohe Meinung von sich: नातिमानिता BHAG. 16, 3.

अतिमानिन् (von मन् mit अति) adj. eine sehr hohe Meinung von sich habend R. 3, 24, 17.

अतिमानुष (अति + मानुष) adj. übermenschlich: रूपम् HĪP. 4, 25. कर्माणि DRAUP. 7, 10.

अतिमार (अति + मार) m. N. eines Königs BHĀG. P. im VP. 447, N. 9.

अतिमारुत (अति + मारुत) m. sehr heftiger Wind JĀGĀ. 1, 149.

अतिमुक्त (von मुच् mit अति) 1) adj. a) von Etwas befreit, mit dem acc.: एतेनो हास्य सर्वं यज्ञक्रतुव एतं मृत्युमतिमुक्ताः ÇĀ. Br. 2, 3, 3, 10. — b) frei von allen Begierden (निःसङ्ग) MED. I. 183. — c) unfruchtbar (निष्कल) H. an. 4, 96. — 2) m. Name zweier Pflanzen: a) *Gaertnera racemosa*, ein wegen der Schönheit und des Geruchs der Blüten in den Gärten gezogener Strauch, AK. 2, 4, 2, 52. H. an. MED. — b) *Dalbergia ougeinensis* H. an. MED.; s. तिनिश. — Vgl. अतिमुक्तक.

अतिमुक्तक (von अतिमुक्त) m. R. 5, 16, 2. 74, 4. LALITAV. 347. N. verschiedener Pflanzen: 1) *Dalbergia ougeinensis* AK. 2, 4, 2, 7. Suçr. 1, 183, 7. — 2) *Gaertnera racemosa* H. 1147. RĀGĀN. im ÇKDR. — 3) *Diospyros glutinosa* RĀGĀN. im ÇKDR. — 4) = हरिमन्थ HĀR. 179.

अतिमुक्तकमाला (अतिमुक्तक + माला) f. N. pr. eines Mädchens LALITAV. 253.

अतिमुक्ति (अति + मुक्ति) f. vollständige Befreiung: मृत्योः ÇĀ. Br. 2, 3, 3, 9. 14, 6, 1, 5. 8. = BRH. ĀR. Up. 3, 1, 3. 6. — Vgl. अतिमोक्ष.

अतिमूर्ति (अति + मूर्ति) f. Ueberkörperlichkeit, höchste Vollendung der Gestalt, ist Name einer Äçv. ÇĀ. 9, 8. beschriebenen Ceremonie; vgl. SĀJ. im RV. I, 459. 684. 912.

अतिमृत्यु (अति + मृत्यु) adj. den Tod besiegend KĀND. Up. 2, 10, 1.

अतिमैथुन (अति + मैथुन) n. allzu häufiger Geschlechtsgenuss (Gegens. अतिब्रह्मचर्य) Suçr. 1, 290, 12. 263, 6.

अतिमोक्ष (अति + मोक्ष) m. vollständige Befreiung: तद्यदिदं मनः सो ऽसौ चन्द्रः स ब्रह्मा सा मुक्तिः सातिमुक्तिरित्यतिमोक्षा अथ संपदः BRH. ĀR. Up. 3, 1, 6. = ÇĀ. Br. 14, 6, 1, 8.

अतिमोदा (von अति + मोद) f. N. eines Baumes mit ausgezeichnet duftenden gelben Blüten, *Jasminum heterophyllum*, Roxb. (नवमल्लिका) RĀGĀN. im ÇKDR.

अतिपव (अति + पव) m. eine Art Gerste (एव) Suçr. 1, 199, 2.

अतिपश (अति + पश = पशम्) adj. von grossem Ruhm: बृहत्सेनामतिपशम् N. 8, 4. — Vgl. अतिपशम् und सुयशा MBu. 1, 3795.

अतिपशम् (अति + पशम्) adj. von grossem Ruhm: अतिपशा लोके रामः R. 2, 1, 6.